ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 11 सितम्बर-I, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

प्रेम व सहानुभूति पूर्ण भाषा का करें उपयोग

भोड़ाकला (ओ.आर.सी.)। केवल हमारे कहने मात्र से लोग परिवर्तित नहीं हो जाएंगे। हम जैसा दूसरों से करने के लिए कहते हैं तो पहले हमें स्वयं वैसा आचरण करके दिखाना होगा। ऐसा करने पर ही हमारी कही हुई बातों का दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और लोग परिवर्तित होंगे। अगर हम किसी व्यक्ति विशेष अथवा आस-पास के लोगों में बदलाव लाना चाहते हैं तो हमें उनके साथ प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्वक वार्ता करनी होगी, उनकी भावनाओं का सम्मान करना होगा। हमें उनकी बातों को भी धैर्यपूर्वक सुनना होगा।

देश के 500 से भी ज्यादा चिकित्सकों को ब्र.कु.शिवानी राजयोग का महत्व समझाते हुए

उक्त विचार अंतर्राष्ट्रीय राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु.शिवानी ने ब्रह्माकुमारीज़ ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर परिसर में 'होप, हैप्पीनेस एण्ड हीलिंग' विषय पर आयोजित सेमिनार में दिल्ली, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों से आए 500 से भी अधिक चिकित्सकों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि जब हम दूसरों के साथ प्रेम एवं सहानुभूति के साथ बात करेंगे तो स्वयं उनके मन में हमारे प्रति श्रेष्ठ भावनाएं उत्पन्न होंगी। इस प्रकार से उनके अन्दर अपने आप परिवर्तन आएगा और यह एक सच्चा और अच्छा परिवर्तन होगा। संक्षेप में केवल सैद्धान्तिक बातें करने मात्र से लोगों पर उसका असर नहीं होता है बल्कि हमें उसे प्रयोगात्मक रुप से करके दिखाना होगा। चिकित्सकों को जीवन दाता कहा जाता है। उन्हें भगवान के बराबर दर्जा दिया जाता है। मानव जीवन को विभिन्न प्रकार के शारीरिक रोगों व मानसिक तनाव से दूर रखने में चिकित्सकों की अहम भूमिका होती है। लेकिन वर्तमान युग में अत्यधिक व्यस्तता के कारण चिकित्सकों को स्वयं मानसिक तनाव की स्थिति का सामना करना पड़ता है। चिकित्सकों को इस मानसिक तनाव से दूर रखने में राजयोग का नियमित अभ्यास लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ.माधुरी बिहारी, हेड ऑफ दि डिपार्टमेन्ट न्यूरोलॉजी एम्स ने राजयोग के लाभ के बारे में अपना अनुभव बताते हुए कहा कि मैं पिछले एक वर्ष से राजयोग का नियमित अभ्यास कर

-शेष पेज 10 पर..

दुनिया को बनाना है एक ईश्वरीय परिवार

श्रेष्ठ संसार का आधार -श्रेष्ठ संकल्प, मानव जीवन के लिए सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, वर्तमान समस्याओं का समाधान, सर्व धर्म मान्य -परमशक्ति,जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर किया संतों-महात्माओं ने विमर्श।

ज्ञान सरोवर। परमधाम आश्रम अमरावती से पधारे स्वामी शास्वतानंद जी महाराज ने ब्रह्माकुमारीज धार्मिक सेवा प्रभाग द्वारा 'एक ईश्वर -एक ईश्वरीय परिवार' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस अलौकिक आयोजन को देखते हुए हृदय गदगद हो रहा है। संसार को देखने की हमारी जो दृष्टि है हमें उसे सुधारना है। ईश्वर एक है, नाम उनके अलग-अलग हैं। इस ज्ञानसरोवर के ज्ञान में गोता लगाकर हम अपने अंदर के अंधकार को दूर करके उस परम सत्य का अनुभव कर सकेंगे। इस दुनिया को एक ईश्वरीय परिवार बना सकेंगे।

हरिद्वार से पधारे महामंडलेश्वर त्यागमूर्ति दर्शन सिंह जी महाराज ने कहा कर्मों के अनुसार हम अपना प्रालब्ध प्राप्त करते हैं। एक नूर ते सब जग उपज्या। सबका पिता वाही परमपिता है। इस संस्थान का तो कोई मुकाबला नहीं है। इसकी सफलता हर दिशा में फैल रही है। इनकी पद्धति अनूठी है। इनकी शिक्षाओं को आत्मसात करें।

ज्ञानसरोवर। स्वामी शास्वतानंद जी महाराज, अब्दुल अजीज जी, दादी रतनमोहिनी, महामण्डलेश्वर दर्शनसिंह त्यागमूर्ति, बसवमूर्ति स्वामी, ब्र.कु.मनोरमा, ब्र.कु.रामनाथ तथा अन्य उद्घाटन करते हुए।

वलसाड से पधारे भाई अब्दुल अजीज जी ने कहा कि ईश्वर अल्लाह एक है। मात्र अल्लाह ही पूजा के लायक है। परमात्मा कृपालु एवं दयालु है। हमारे बदन में पहुँचकर चीजें बदबूदार हो जाती हैं। शरीर अशुद्ध है मगर हमारी आत्माएं पावन हैं। वह अल्लाह सभी विशेषताओं से सम्पन्न है बाकी कोई नहीं। हम सभी उन्हीं की संतान हैं। हमें प्रेम से मिलजुल कर रहना है।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि हमारे कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की आप सभी

-शेष पेज 4 पर..

विश्व कल्याण का चिन्तन ही भारतीय संस्कृति की महानता

आबू पर्वत। मध्यप्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री महेन्द्र हरदिया ने ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग द्वारा 'माइण्ड बॉडी मेडिसीन' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय चिकित्सक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि यहाँ आते ही मुझे उस मानसिक शांति की अनुभूति हुई जिसे आज दुनियाँ तलाश कर रही है। हमारी संस्कृति की महानता ही यह है कि वह विश्व के कल्याण का चिंतन करती रहती है। चिकित्सकों को अपने लिए वक्त नहीं मिलता है लेकिन अपना कल्याण किये बिना वे दूसरों का हित नहीं साध पाएंगे। अत: पहले उन्हें अपने बारे में भी विचार करना होगा। काम के बोझ को कम करके आप खुद को अधिक उपयोगी बना पाएंगे। अपने व्यवसाय में सिम्पैथी का पुट अवश्य डालें। यह अभी समाप्त सा हो गया है। यहाँ से ध्यान का बल प्राप्त करके आप यह कर पाएंगे। मेरा विश्वास है कि इस सम्मेलन से आप सभी को काफी लाभ प्राप्त होगा।

ब्रह्माकुमारीज संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि हमें सदैव यह याद रहे कि इस शरीर के द्वारा बातचीत करने वाली शक्ति मैं आत्मा ही हूँ। मगर हमने इसे भुला दिया है। इसीलिये आज हर कोई बीमार है और कोई न कोई दवा का सहारा उन्हें लेना पड़ रहा है। प्राचीन समय में लोग इतने बीमार नहीं थे क्योंकि वे इतने देहाभिमानी न थे। देह से आत्मा की ओर की यात्रा हमें बीमारी से छुटकारा दिलाएगी। राजयोग के अभ्यास से हमें बीमारियों एवं अन्य समस्याओं से मुक्ति मिलेगी।

ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के अध्यक्ष डॉ अशोक मेहता ने कहा कि यहाँ का माहौल

-शेष पेज 8 पर..

आबू पर्वत। दादी रतनमोहिनी कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। मंचासीन हैं मध्यप्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री महेन्द्र हरदिया, ब्र.कु.अशोक मेहता तथा अन्य।